अक्खड— (आ + स्कन्द्) आक्रमण करना।

अक्खुंब— १ चखकर छोड़ना। २ नखों से कुरेदना (निचू २ पृ १२४)।

अक्खोड (आ + स्फोटय्)—थोड़ा या एक बार झटकना (द ४ सू १९)।

अक्खोड (कृष्)—तलवार को म्यान में से खींचना (प्रा ४।१८८)।

अग्गुम (पृ)—पूरित करना।

अग्घ (अर्ह्)—प्राप्त होना (उ ६।४४)।

अग्घ (राज्)—शोभना, चमकना (प्रा ४।१००)।

अग्घव (पूर्)—पूरा करना (प्रा ४।१६९)।

अग्घाड (पूर्)—पूरा करना (प्रा ४।१६९)।

अग्घोड (पृ)—पूर्ण करना।

अच्चुक्क (वि + ज्ञापय्)—विज्ञापन करना।

अच्छ (कृष्)—खींचना।

अच्छ (आस्)—बैठना, ठहरना (उशाटी प १४७)।

अच्छिज्ज—आच्छादन करना (से १४।७)।

अच्छुर—बिछाना—'संथारयं अच्छुरंति' (ओटी प ८३)।

अट्ट (क्वथ्)—उबालना, पकाना (प्रा ४।११९)।

अट्ट (शुष्)—सूखना—'अट्टंति णहअले च्चिअ मारुअभिण्णलहुआ सलिलकल्लोला' (से ५।६१)।

अड—वंदना करना (आवचू १ पृ २७१)।

अडक्खम्म—देखभाल करना—'अडक्खम्मिज्जंति सवरिआहिं वणे' (दे १।४१ वृ)।

अडुक्ख (क्षिप्)—फेंकना (प्रा ४।१४३)।

अडुव—गिरवी रखना।

अड्ड—रोकना (आवहाटी २ पृ ८७)।

अणच्छ (कृष्)—खेती करना (प्रा ४।१८७)।

अणुच्चिट्ठ (अनु + स्था)—१ स्थिर रहना, टिकना—'सामण्णमणुच्चिट्ठइ' (द ५।१३०)। २ अनुष्ठान करना। ३ करना।

अणुवज्ज—सेवा-शुश्रूषा करना (दे १।४१ वृ)।

अणुवज्ज (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org